## एक नजर में

### संजा पर्व- जब गोबर बोलता है और फूल मुस्कुराते हैं मालवा और निमाड़ की लोक कला और संस्कृति का अनूठा उत्सव

**सिघाना** - भाद्रपद की पूर्णिमा से लेकर सर्व पितृ अमावस्या तक जब आसमान में चांद सूरज अपनी कहानी करते हैं तब मालवा और निमाड़ की दीवार पर एक और कहानी जन्म लेती है वह कहानी है संजा की यह सिर्फ एक एक पाव नहीं बल्कि कुंवारी कन्याओं के मन की कोमल भावनाओं को सपनों और अभिलाषाओ का 16 दिनों का महाकाव्य है जिसे वे अपनी उंगलियों और कल्पनाओं से रचती है इन दिनों एक खास पर्व संजा भी मनाया जाता है। यह पर्व सांझी, संझया, माई, संझा देवी, सांझी पर्व आदि अन्य नामों से भी जाना जाता है। संजा पर्व प्रतिवर्ष भाद्रपद माह की पूर्णिमा से आश्विन मास की अमावस्या तक अर्थात् पूरे श्राद्ध पक्ष में 16 दिनों तक मनाया जाता है। धार्मिक मान्यतानुसार संजा माता गौरा का रूप होती है, जिनसे अच्छे पति पाने की मनोकामना की जाती है। कई स्थानों पर कन्याएं आश्विन मास की प्रतिपदा से इस व्रत की शुरुआत करती हैं। इस त्योहार को कुंआरी युवतियां बहुत ही उत?साह और हर्ष से मनाती हैं। श्राद्ध पक्ष में 16 दिनों तक इस पर्व ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक देखी जा सकती है इस पर्व की खास तौर पर मालवा, निमाड़, के क्षेत्रों में देखी जा सकती हैं संजा पर्यावरण को समर्पित एक लोक पर्व है। यह पर्व प्रकृति की देन फल-फूल, गोबर, नदी, तालाब आदि के देखरेख के साथ ही हमें इन चीजों को संजोने की प्रेरणा भी देता है। वृक्षारोपण तथा पौधारोपण करके हम हमारी अनमोल धरा को हरा-भरा करके प्रकृति के सहायक बनते हैं और अलग-अलग रंगबिरंगी फूलों से संजा को सजाकर प्रकृति की खूबसूरती में चार चांद लगते हैं और इस तरह हर छोटे-बड़े त्योहारों को अपने जीवन में अपना कर हम प्रकृति और हमारी धार्मिक और लोक परंपराओं का संचालन करते हैं। इन दिनों चल रहे श्राद्ध पक्ष के पूरे 16 दिनों तक कुंआरी कन्याएं हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में दीवारों पर बहुरंगी आकृति में संजा ग?ती हैं तथा ज्ञान पाने के लिए सिद्ध स्त्री देवी के रूप में इसका पूजन करती हैं। एक लोक मान्यता के अनुसार- सांझी सभी की सांझी देवी मानी जाती है। संध्या के समय कुंआरी कन्याओं द्वारा इसकी पूजा-अर्चना की जाती है। संभवत: इसी कारण इस देवी का नाम सांझी पड़ा है। कई स्थानों पर इसे संजा फूली पर्व भी कहा जाता है। संजा पर्व के पांच अंतिम दिनों में हाथी-घोडे, किला-कोट, गा?ी आदि की आकृतियां बनाई जाती हैं। 16 दिन के लोक पर्व के अंत में अमावस्या को सांझी देवी को विदा किया जाता है। इन दिनों संजा पर्व के मधुर लोक गीत भी सुनाई पड़ते हैं। प्रतिदिन गोबर से अलग-अलग संजा बनाकर फूल व अन्य चीजों से उसका श्रृंगार किया जाता है पर्व पर जब गोबर बोलता है और फूल मुस्कुराते हैं तथा अंतिम दिन संजा को तालाब व नदी में विसर्जित किया जाता है। इस पर्व का समापन हो जाता है। आजकल बदलते समय के साथ इस पर्व में आधुनिक तरीके अपनाए जाने लगे हैं। शहरों में अब गोबर के स्थान पर बाजारों में कागज पर उकेरे या रचे हुए मांडनों का उपयोग होने लगा है, जिन्हें युवतियां दीवारों पर चिपकाकर पूजन करती हैं यह मालवा और निमाड़ की लोक कला और संस्कृति का अनूठा उत्सव है

### विनोद खरमले परिवार में ब्रम्हाकमल खिला दर्शन किए

**सरदारपुर।** नालछा दरवाडा धार निवासी विनोद खरमले परिवार में ब्रम्हाकमल का फूल खिल गया। परिवार और आस पडोसियों ने खुशी के साथ ब्रम्हाकमल का पूजन कर दर्शन लाभ लिया। बताया जाता है कि यह ब्रम्हाकमल फूल 12 साल में खिलता है। जानकारी मनीष, अनिल बंकर सरदारपुर ने दी।

### सजने लागे माता के दरबार, नवरात्रि उत्सव की तैयारी जोरों पर

**बाकानेर** । भक्ति और आराधना का पर्व शारदीय नवरात्रि महोत्सव सोमवार से शुरू हो जाएगा नो दिवशीय नवदुर्गा उत्सव मनाने के लिए गरबा मंडलों की तैयारियां जोरों पर चल रही है माता के दरबार सजने लगे हैं मंदिरों में आकर्षक सजावट की जा रही है गरबा पंडालों को आकर्षक सजाया जा रहा है इसी कड़ी में बाकानेर में श्री 64 जोगनी माता मंदिर परिसर श्री रामेश्वर मंदिर परिसर मनोहर बाल मित्र मंडल विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल शंकर मंदिर परिसर और श्री गणेश मंदिर परिसर में गरबा पंडाल सजाए जा रहे हैं क्षेत्र की प्राचीन सात माता देवी जी एवं निमाड़ क्षेत्र का एकमात्र श्री 64 जोगनी माता मंदिर में भी आकर्षक विद्युतसज्जा की गई है मंदिर पहुंच मार्गो पर ग्राम पंचायत बाकानेर द्वारा विद्युत रोशनी की बेहतर व्यवस्था की है वही साफ-सफाई की उत्तम व्यवस्था की गई। महिलाओं एवं बालिकाओं द्वारा गरबा रास की प्रैक्टिस की जा रही है 9 दिनो तक अलग-अलग दिनों तक ड्रेस कोड में आकर्षक गरबो की प्रस्तुति दी जाएगी इस नवदुर्गा उत्सव को सफल बनाने के लिए पुलिस प्रशासन ने भी सभी पंडालों से जानकारी एकत्रित कर सुरक्षा की व्यवस्था की है।

### रामकथा में सीताराम विवाह प्रसंग बताया

**कुक्षी।** धर्म की जय करने से धर्म की जय नहीं होंगी धर्म की जय तब होंगी जब हम धर्म को आचरण मे लाये और अधर्म को आचरण से हटाए तब धर्म की जय होंगी .केवल उदघोष लगाने से धर्म की जय नहीं हो सकती .यह बात दातारी वाटिका में चल रही श्री राम कथा के आठवें दिन सीताराम विवाह प्रसंग पर कथाचार्य पंडित राजेंद्र द्विवेदी नें श्रोताओं से कही .उन्होंने कहा की आजकल धर्म को लोगों नें नाच कूदकर मनोरंजन का माध्यम बना दिया कथा हो तों नाचो सुंदरकांड हो तो नाचो रामायण, गरबा, जागरण कोई भी धार्मिक आयोजन हो या शादी सब जगह लोग नाच रहे है ऐसे भला धर्म की जय कैसे हो सकती है आज धर्म और संस्कृति को बचाने के लिए धर्म का सही अर्थो मे पालन कर आचरण मे उतारकर सुधार के साथ धर्म के मार्ग पर चलकर धर्म को सही अर्थो मे समझना आवश्यक है ।कथाचार्य नें परिवार मे पत्नी की भूमिका और उसका महत्व पर कहा की पत्नी न केवल अपने बच्चों की देखभाल करने तक सीमित है, बल्कि वह अपने पति और परिवार को पतन से बचाये वह पत्नी होती है .कथा विश्राम आरती के लाभार्थी का मनीष गुप्ता मेडिकल अशोक गुप्ता प्रसाद,महेश गुप्ता,संजय गुप्ता को प्राप्त हुआ।

# साउथ इंडियन थीम पर लेडिस फेनफेयर का आयोजन, आज देगा वृंदावन का आरवी बेंड प्रस्तुति

**धार।** अग्रवाल समाज धार के द्वारा अग्रसेन जयंती महोत्सव 2025 धूमधाम से मनाई जा रही है जिसमें समाज की महिलाएं एवं बालिका बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही है समाजजनों में काफी उत्साह देखा जा रहा है गुरुवार को अग्रवाल महिला मंडल,अग्रवाल सखी समिति,अग्रवाल क्रिएटिव ग्रुप द्वारा पूजा की थाली सजाओं प्रतियोगिता में का आयोजन हुआ जिसमें प्रथम हिमांशी एंड यशी अग्रवाल रही वही लेडीज फेनफेयर साउथ इंडियन थीम के संग फन फेयर के आकर्षण कपल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें एंकर अश्मित वर्मा द्वारा एंकरिंग कर सबका मनोरंजन कर गेम्स खिलवाए प्रतियोगिता में समाज की महिलाएं एवं बालिकाएं ब?ी संख्या में साउथ इंडियन थीम पर आधारित पारंपरिक वेशभूषा पहन कर शामिल हुई,

वही इसके बाद अग्रोहा थिंकर्स ग्रुप द्वारा अग्रवाल प्रीमियर लीग क्रिकेट का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम टीम सावन अग्रवाल,कार्तिक अग्रवाल,द्वारका दास अग्रवाल,शिवम अग्रवाल, तरूण गर्ग,आकाश अग्रवाल रही एवं द्वितीय टीम आदित्य अग्रवाल, अनमोल अग्रवाल,राघव गुप्ता,सावन अग्रवाल,अभिषेक अग्रवाल,रितेश अग्रवाल रहे।

कार्यक्रम में समाज अध्यक्ष योगेश अग्रवाल, अग्रसेन जयंती महोत्सव समिति के संयोजक केशव अग्रवाल, सचिव आयुष सांघी, कोषाध्यक्ष पुनीत गोयल, विनय अग्रवाल, अग्रवाल महिला मंडल की सीमा अग्रवाल,नीलम अग्रवाल,अमीता गोयल, श्री अग्रवाल सखी समिति के नीलम अग्रवाल,श्रद्धा अग्रवाल,ममता अग्रवाल, श्री अग्रोहा क्रिएटिव ग्रुप की वंदना अग्रवाल, श्वेता अग्रवाल, सरिता अग्रवाल, अग्रोहा थिंकर्स ग्रुप के ऋषभ सांघी,रजत सांघी, पुनीत गोयल सहित समाजजन मौजूद था। उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी श्याम मंगल लेबड ने दी। शनिवार को होने वाले कार्यक्रम अग्रवाल बालिका मंडल धार द्वारा गमला पेंटिग प्रतियोगिता, आईक्यू टेस्ट प्रतियोगिता, अग्रवाल क्रिएटिव थिंकर्स ग्रुप द्वारा वृंदावन रस पंडित गोविंद जी शर्मा आरवी बेंड वृंदावन धाम द्वारा प्रस्तुति दी जाएगी।

# विधायक निधि से शासकीय अस्पताल के लिए विद्युत ट्रांसफार्मर स्वीकृत

*विधायक ने किया भूमि पूजन*

**डही।** सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग के शासकीय अस्पताल में लंबे समय से चल रही वोल्टेज की समस्या को लेकर क्षेत्रीय विधायक सुरेंद्र सिंह हनी बघेल ने विद्युत ट्रांसफार्मर स्वीकृत कर गुरुवार को विधिवत ट्रांसफार्मर के लिए भूमि पूजन किया क्षेत्रीय विधायक सुरेंद्र सिंह हनी बघेल ने डही क्षेत्र की जनता के लिए विभिन्न अवसरों पर स्वास्थ्य सुविधा सुगमता से उपलब्ध हो को दृष्टिगत रखते हुए कई बार अस्पताल में मेडिसिन एवं अन्य सुविधाएं समय-समय पर उपलब्ध कराई डही क्षेत्र की जनता के लिए जब भी स्वास्थ्य को लेकर मेडिसिन व अन्य उपयोगी स्वास्थ्य सुविधाओं की आवश्यकता रही तब तक विधायक निधि से मेडिसिन वह अन्य मशीने उपलब्ध करवाई गई इस अवसर पर हनी बघेल ने अपने कार्यकर्ताओं के साथ अस्पताल का निरीक्षण कर शासन से प्राप्त स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया अस्पताल में उपस्थित मरीजों से स्वास्थ्य हालचाल पूछे एवं एक्सरे मशीन व ब्लड की जांच का निरीक्षण कर अपने ब्लड की जांच भी कार्रवाई बीएमओ डाक्टर विजय अहरवल ने बताया कि क्षेत्रीय विधायक श्री सुरेंद्र सिंह हनी बघेल का पूरी तरह से क्षेत्र की जनता के स्वास्थ्य को लेकर समय-समय पर ध्यान दिया जाता है और कई अवसरो पर विधायक निधि से स्वास्थ सुविधाऐ भी उपलब्ध कराई आज इस अवसर पर विधायक जी का आभार मानते हुए धन्यवाद दिया ओर कोरोना काल में भी स्वास्थ्य का को लेकर स्वास्थ्य विभाग को मेडिसिन वन्य सामग्री प्रदान की गई थी इसकी प्रशंसा की उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया

इस अवसर पर विधायक प्रतिनिधि राकेश नोरके, डही नगर पंचायत प्रतिनिधि अब्दुल्ला बोहरा ,ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष राजेंद्र डावर, नगर कांग्रेस अध्यक्ष नारायण माहेश्वरी, युवा कांग्रेस अध्यक्ष छतर सिंह ठेकेदार ,जिला पंचायत सदस्य बालूभाई चोंगड, जनपद सदस्य भीकूसिंह चौहान,महेंद्र डोडवा, ,राकेश सोलंकी ,उत्तम अलावा पडियाल पिरू डावर, सरपंच नरसिंह खामी, सुबला भाई कातरखेड़ा पार्षद मनिया भाई ठेकेदार ,जितेन खरते ,मंजू दिनेश मोरी ,राकेश ठाकुर, प्रकाश डोडवा, विनोद भावसार, शानू सिंगल, आफात सिंगल, इमरान लोहार, विक्रम सोलंकी, भेरलाभाई नरझली,भुरसिंह सोलंकी, गामपुर, जुनैद पठान ,नौशाद देंगल दिनेश कुलथ्या,सहित सैकड़ो कांग्रेस के कार्यकर्ता उपस्थित रहे इसके एक दिन पूर्व डही ब्लॉक की विभिन्न पंचायत का दौरा कर विधायक निधि से स्वीकृत विद्युत ट्रांसफार्मर का उद्घाटन किया डही ब्लॉक के आदिवासी किसानों की कृषि संबंधित समस्याओं को देखते हुए ग्राम गाना ,गामपुर ,कातरखेड़ा, नरझली ,टेमरिया, कलमी, खट्टामी,डीग्वी और चिकली में विधायक निधि से विद्युत ट्रांसफार्मर का उद्घाटन ग्रामीण जनों एवं कांग्रेस कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में किया

2

# केंद्रीय वित्तमंत्री सीतारमण से आयकर की तारीख बढ़ाने की मांग

**धार**- कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के प्रदेश मंत्री एवं नरेंद्र मोदी विचार मंच के प्रदेश प्रभारी धार के वरिष्ठ कर सलाहकार महेशचंद्र माहेश्वरी ने आज व्यापारिक संगठन, कर सलाहकार, अकाउंटेंट, किराना संगठन, ठेकेदार के साथ ही मोदी विचार मंच के पदाधिकारी के साथ केंद्रीय राज्यमंत्री एवं धार की लोकप्रिय सांसद सावित्रीजी ठाकुर केंद्रीय राज्यमंत्री महिला एवं बाल विकास भारत सरकार से मिलकर निवेदन किया कि पिछले वित्तिय वर्ष 2024-25 कि आयकर की तारीख 15-16 सितंबर 2025 आखिरी तारीख थी। लेकिन पोर्टल 11 तारीख से ही बहुत स्लो काम कर रहा था। वह अंतिम समय में 14 रात और 15-16 को साइट पर जाने के कारण रिटर्न नहीं भर सके। जिससे कई व्यापारी, प्रोफेशनल कर्मचारी वंचित रह गए। ऐसी स्थिति में माहेश्वरी के साथ नरेंद्र मोदी विचार मंच के अध्यक्ष व अन्य व्यापारी संगठनों ने मंत्री से मिलकर सर्किट हाउस पर ज्ञापन देकर मांग की की आयकर विवरणी दाखिल की तारीख 30 सितंबर की जाए। साथ ही आयकर ऑडिट का समय 30 सितंबर है उसकी तारीख भी बढ़ाई जाए ताकि व्यापारियों को सरकार के साइट का इशू का नुकसान नहीं भरना पड़े और लगने वाली पेनल्टी से बचा जा सके। इस बात की मांग करते हुए मंत्री से यही निवेदन किया कि आप शीघ्र इसकी तारीख बढ़ाने का वित्त मंत्री से निवेदन करते हुए तारीख बढ़ाने की घोषणा करें। इसके साथ ही व्यापारियों ने मांग के साथ ही मोदी सरकार की तारीफ करते हुए मंत्री जी को यह भी ध्यान दिलाते हुए धन्यवाद दिया कि जो हमारे प्रधानमंत्री जी ने जीएसटी की रेट में कमी की है उसके बारे में धन्यवाद देते हुए।

मोदी सरकार के नारों की गूँज करते हुए कहा कि 卐जीएसटी घटी- मिला उपहार- धन्यवाद मोदी सरकार卐 इन नारों के साथ माहेश्वरी व व्यापारी संगठनों ने एवं अन्य पदाधिकारी ने ताली बजाकर स्वागत भी किया और अंत में पूरा ध्यान दिलाते हुए निवेदन किया कि व्यापारियों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए आयकर की तारीख बढ़ाई जाए।

# कन्या छात्रावास सरदारपुर में विधिक साक्षरता शिविर आयोजित

**सरदारपुर** । कन्या छात्रावास सरदारपुर में विधिक साक्षरता शिविर आयोजित किया गया । शिविर में प्रथम जिला एवं तहसील विधिक सेवा प्रभारी हेमंत यादव द्वितीय जिला जज श्रीमती रश्मि वॉल्टर तृतीय जिला जज अब्दुल्लाह अहमद अभिभाषक संघ अध्यक्ष कमल किशोर वैष्णव उपस्थित हुए । शिविर को श्रीमंत यादव ने संबोधित करते हुए छात्राओं को नियमित अध्ययन करने मोबाइल का पढ़ाई के लिए समय-समय पर उपयोग करने विधि का प्रारंभिक ज्ञान होने की सलाह दी । श्रीमती रश्मि वॉल्टर ने संबोधित करते हुए बताया कि महिलाओं से संबंधित अपराध किस प्रकार से होते हैं महिलाएं किस प्रकार से सुरक्षित रह सकती है महिलाओं के क्या कानूनी अधिकार है इस संबंध में प्रेरक उद्बोधन दिया। श्री वैष्णव ने छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि दैनिक जीवन में कानून का ज्ञान क्यों होना चाहिए कानून का किस प्रकार पालन करना चाहिए बताया।

## एक नजर

### सहेलियों की सहेली है संजा माता - श्राद्ध पक्ष के साथ शुरू होता है 16 दिन का लोकपर्व

# संजा पर्व: प्रकृति, लोक कला और संस्कृति का अनूठा संगम

**मनावर (निर्मल जौहरी) संजा जिसे संजा बाई, संझा और सुखसंजा भी कहा जाता है। मालवा निमाड़ या मध्य प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्सों में मनाया जाने वाला एक पारंपरिक लोकपर्व है। यह पर्व प्रकृति, लोक कला और संस्कृति का अनूठा संगम है। जो मुख्य रूप से कुंवारी लड़कियों की रचनात्मकता और सामाजिक जुड़ाव को दर्शाता है। यह पर्व युवतियों द्वारा भाद्रपद पूर्णिमा से अश्विन अमावस्या तक 16 दिनों तक मनाया जाता है। ये 16 दिन पितृ पक्ष के साथ आते हैं। इस दौरान, युवतियों प्रतिदिन सुबह के समय गोबर और फूलों से घर की दीवारों पर संजा के सुंदर भित्तिचित्र बनाती हैं और सुबह शाम दोनों समय पूजा कर अपनी सहेलियों के साथ लोकगीत गाती हैं।**

*पौराणिक महत्व* - संजा लोकपर्व का सीधा संबंध माता पार्वती से माना जाता है। मान्यता अनुसार, संजा एक ऐसी किशोरी थी जो भगवान शिव को अपने पति के रूप में पाना चाहती थी। भगवान शिव ने उसके तप और श्रद्धा को देखकर उसे यह वरदान दिया कि जो युवतियों 16 दिनों तक संजा की आराधना करेंगी, उन्हें मनचाहा और योग्य वर मिलेगा। कुछ शास्त्रों के अनुसार धरती पुत्रियां सांझी को ब्रह्मा की मानसी कन्या संध्या, दुर्गा, पार्वती तथा वरदायिनी आराध्य देवी के रूप में पूजती हैं। सांजी, संजा, संझया और सांझी जैसे भिन्न-भिन्न प्रचलित नाम अपने शुद्ध रूप में संध्या शब्द के द्योतक हैं। इसी मान्यता के कारण यह पर्व कुंवारी युवतियों के लिए विशेष महत्व रखता है। इसके अलावा, यह पर्व पितृ पक्ष के दौरान मनाया जाता है, इसलिए इसे पितरों की शांति और समृद्धि से भी जोड़ा जाता है। माना जाता है कि इन दिनों में पितर धरती पर आते हैं और संजा के माध्यम से उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। संजा पर्व के पांच अंतिम दिनों में हाथी-घोड़े, किला-कोट, गाड़ी आदि की आकृतियां बनाई जाती हैं।

**संजा पर्व की खासियत,**-चित्रकला और कला*-इस पर्व की सबसे बड़ी खासियत गोबर और विभिन्न रंगों के फूलों से बनाई जाने वाली कलाकृति है। पहले दिन, संजा की आकृति बनाई जाती है और अगले 15 दिनों तक उसमें सूर्य, चंद्रमा, तारे, किले और अन्य लोक चित्र उकेरे जाते हैं। अंतिम दिन, %किलेकोट% बनाया जाता है, जिसमें किले और द्वारपालों की आकृतियां होती हैं।

*लोकगीत*- हर शाम, लड़कियां संजा के सामने इकट्ठी होकर पारंपरिक लोकगीत गाती हैं। ये गीत 16 दिनों के चित्रों और संजा के जीवन से संबंधित होते हैं, जैसे %संजा कोनी केत है%, %एकली खड़ी रहे म्हारी संजा%, %सूरज म्हारा केवड़ो% आदि।

*सामाजिक जु?ाव*-यह पर्व एक समुदाय के रूप में मनाया जाता है। लड़कियां समूह में मिलकर कलाकृतियां बनाती हैं, गीत गाती हैं और एक-दूसरे के घरों में जाती हैं, जिससे उनके बीच सामाजिक मेलजोल और दोस्ती बढ़ती है।

*प्रकृति से जुड़ाव*- इस पर्व में प्राकृतिक चीजों जैसे गोबर, मिट्टी और मौसमी फूलों का उपयोग किया जाता है, जो इसे प्रकृति के करीब लाता है।

*संजा का समापन*-पितृ पक्ष के 16वें दिन, जिसे पिपलिया पूनो% भी कहा जाता है, संजा का विसर्जन किया जाता है। युवतियां संजा को तालाब या नदी में विसर्जित करती हैं और अंतिम गीत गाते हुए उनसे अगले साल फिर से आने का अनुरोध करती हैं। इसके बाद प्रसाद के रूप में पूरी और पकवान का वितरण होता है। अमावस्या को 16 दिन बनाई गई सूखसंजा पर्व के दिनों में रोजाना शाम को युवतियां अपनी सहेलियों के घर-घर जाकर कई गीत गाकर संजा को मनाती हैं एवं प्रसाद वितरण किया जाता हैं। संजा पर गाए जाने वाले गीतज

*संझा बाई को छेड़ते हुए युवतियां ये गीत गाती हैं*

'संझा बाई का ला?जी.., लूग?ो लाया जा?जी.., असो कई लाया दारिका.., लाता गोट किनारी का..।'

'संझा.. तू थारा घर जा.. कि थारी मां मारेगी कि कूटेगी, चांद गयो गुजरात.. हरणी का ब?ा ब?ा दांत..., कि छोरा छोरी डरपेगा... भई डरपेगा...।' 'म्हारा अंगना में मेंदी को झा?.., दो-दो पत्ती चुनती थी.. गाय को खिलाती थी.., गाय ने दिया दूध.., दूध की बनाई खीर.. खीर खिलाई संझा को.., संझा ने दिया भाई.., भाई की हुई सगाई.., सगाई से आई भाभी..। भाभी को हुई ल?की.., ल?की ने मांडी संझा..।'संझा बाई को ससुराल जाने का संदेश देते हुए ये गीत गाया जाता है*-'छोटी-सी गा?ी लु?कती जाय.., जिसमें बैठी संझा बाई जाय.. घाघरो घमकाती जाय.., लूग?ो लटकाती जाय.. बिछिया बजाती जाय..। 'म्हारा आक?ा सुनार, म्हारा बाक?ा सुनार.. म्हारी नथनी घ?ई दो.. मालवा जाऊं.. मालवा से आई गा?ी.. इंदौर होती जाय.. इसमें बैठी संझा बाई सासरे जाय..।''संझा बाई का सासरे से, हाथी भी आया.. घो?ा भी आया.., जा वो संझा बाई सासरिये..,'

*इसके जवाब में संजा बाई कहती हैं*- 'हूं तो नी जाऊं दादाजी सासरिये...'

*दादाजी समझाते हुए कहते हैं* 'हाथी हाथ बंधाऊं, घोडा पाल बंधाऊं, गाडी स?क पे खडी, जा हो संझा बाई सासरिये...।'

### गीत के अंत में भोग लगाकर गाया जाता है

'संझा तू जिम ले.. चूढ ले.. मैं जिमाऊं सारी रात.., चमक चांदनी सी रात.., फूलो भरी रे परात.., एक फूलो घटी गयो.., संझा माता रूसी गई.., और फिर एक घड़ी, दो घड़ी, सा? तीन घड़ी।' कहकर प्रसाद बाटा जाता है। प्रसाद ताड़ना*-प्रसाद को बांटने के पहले प्रसाद को ढककर रखा जाता है। जिसे ताड़ना कहते है। युवतियां नित नई चीजें प्रसाद बांटने के लिए लाती है ताकि उनके प्रसाद को कोई ताड़ नहीं सके। उत्साह, उमंग, हास्य और मस्ती के साथ मनाए जाने वाला यह पर्व अद्भुत और आलौकिक हैं। आजकल बदलते समय के साथ इस पर्व में आधुनिक तरीके अपनाए जाने लगे हैं। शहरों में अब गोबर के स्थान पर बाजारों में कागज पर उकेरे या रचे हुए मांडनों का उपयोग होने लगा है, जिन्हें लड़कियां दीवारों पर चिपकाकर पूजन करती हैं। ज्ञात हो कि इस बार पितृ महालय 07 सितंबर रविवार से शुरू होकर 21 सितम्बर 2025 रविवार तक जारी रहेगा।